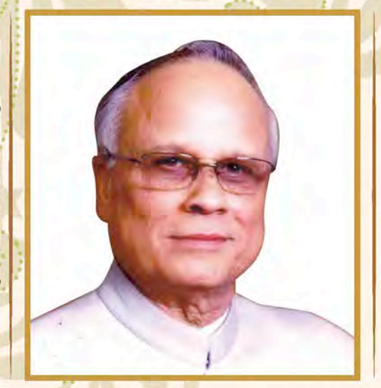

श्री प्रकाश चन्दजी सुराना (मरणोपरांत)

Shri Prakash Chandji Surana (Posthumous)



पद्म श्री
Padma Shri



उनकी पत्नी राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

His Wife receiving the decoration from the President

श्री प्रकाश चन्दजी सुराना (मरणोपरांत)

श्री प्रकाश चन्दजी सुराना भूरामल राजमल सुराना के संस्थापक पार्टनर थे। आप भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति निरूस्वार्थ भाव से समर्पित थे। आपने प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उसके महत्व को स्थापित करने के लिए अभिनव पहलें कीं। आपने प्रतिष्ठित कलाकारों को मंच दिया तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत की दीर्घकाल से पोषित महत्वपूर्ण परम्परा को संरक्षित करने के अतिरिक्त, राजस्थान के और राजस्थान के बाहर की अभिनव प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया।

2. आपका जन्म 8 फरवरी, 1939 को हुआ। आपने महाराजा महाविद्यालय, जयपुर से विज्ञान विषय में स्नातक किया। आप बाल्यावस्था से ही आध्यात्मिक संगीत सुनते और गुन–गुनाया करते थे। बड़े होते ही आपने जेवरात कारोबार की कला के साथ–साथ अपने पूर्वजों से भारतीय शास्त्रीय संगीत में ज्ञान को इच्छापूर्वक ग्रहण किया। भारतीय शास्त्रीय संगीत में लोगों की रूचि पैदा करने के लिए, आपने लगभग पांच दशक पूर्व वरुण आर्टिस्ट काउंसिल शुरू किया तथा अगस्त, 1964 में 'श्रुति मंडल' स्थापित किया, जब सितार वादक पंडित रविशंकर ने संस्थान की पहली संगीत बैठक में परफार्म किया। श्रुतिमंडल के मुख्य उद्देश्यों में भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रति लोगों का ध्यान आकृष्ट करना तथा इसमें रूचि रखने वाले लोगों को प्रोत्साहित करना तथा भारतीय शास्त्रीय संगीत के संरक्षण और संवर्धन हेतु क्रियाकलाप आयोजित करना, शीर्ष कलाकारों (परफार्मर्स) को बढ़ावा देना तथा उदीयमान प्रतिभाओं को सहायता प्रदान करने और भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में अनुसंधानकर्ताओं को अभिप्रेरित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित करना शामिल हैं। कई उभर रहे कलाकारों ने श्रुतिमंडल के मंच से ख्याति प्राप्त की और वे राष्ट्रीय सेलीब्रिटी (गणमान्य) बन गए। श्री सुराना ने श्रुतिमंडल के माध्यम से ऐसे छात्रों को भी सहायता प्रदान की जो 'गुरु–शिष्य परम्परा' की दीर्घकालिक परम्परा के तहत संगीत सीखना चाहते थे किंतु जो कुशल प्रशिक्षक की कमी के कारण ऐसा नहीं कर पाते थे।

3. भारतीय शास्त्रीय संगीत के उत्थान और संवर्धन के लिए आपकी प्रतिबद्धता के परिणामस्वरूप 'राजमल सुराना स्मृति समारोह' का गठन हुआ। यह प्रतिष्ठित तीन दिवसीय समारोह आपके पिता को श्रद्धांजलि देने के लिए वर्ष 1977 में शुरू किया गया। वर्ष 2001 में आपने 'राजमल सुराना स्मृति सम्मान' शुरू किया जिसके अंतर्गत पंडित भीमसेन जोशी, पंडित जसराज, गिरिजा देवी, किशोर अमोनकर, पंडित राजन–साजन मिश्रा, पंडित अजय चक्रवर्ती, बेगम परवीन सुल्ताना, पंडित चन्नुलाल मिश्रा, उस्ताद राशीद खान, उस्ताद अब्दुल रशीद खान, पंडित रविशंकर, पंडित शिवकुमार शर्मा, पंडित हरि प्रसाद चौरसिया, उस्ताद अमजद अली खान और पंडित राम नारायण को अब तक सम्मानित किया गया है।

4. 'कानसेन और तानसेन' की धूमिल हो रही परम्परा को ध्यान में रखते हुए आपने श्रुतिमंडल की सहायता से पूरे वर्ष कई संगीत कार्यक्रम शुरू किया। जनवरी में 'राजमल सुराना स्मृति समारोह', फरवरी में 'बैलेट एवं डांस समारोह', मार्च में फाल्गुन उत्सव, अप्रैल में 'स्थानीय कलाकार समारोह', मई में 'रघु सिन्हा स्मृति सहारोह', जून–जुलाई में 'मानसून महोत्सव', अगस्त में उस्ताद विसमिल्ला खान स्मृति समारोह और "यंग मास्टर्स म्यूजिकल फेस्टिवल" जैसे कई और कार्यक्रम आयोजित किए गए। आप केवल एक व्यक्ति या संगठन नहीं थे, बल्कि आप स्वयं में एक घराना थे अर्थात् आपने सुराना संगीत घराना की स्थापना की।

5. आपको भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में बेजोड़ परम्परा के लिए सराहना मिली। पुरस्कारों की लंबी सूची में प्रमुख नामों में महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन–उदयपुर द्वारा वर्ष 1988 में 'डगर घराना अवार्ड' शामिल हैं। जयपुर सिटी प्लेस द्वारा वर्ष 2007 में 'सवाई भवानी सिंह पुरस्कार' वर्ष 2007 में 'इंडियन म्यूजिक पुरस्कार' तथा संगम ट्रस्ट द्वारा वर्ष 2014 में 'राजस्थान कला गौरव सम्मान' शामिल हैं।

Shri Prakash Chandji Surana (Posthumous)

Shri Prakash Chandji Surana, Founding Partner of Bhuramal Rajrnal Surana was selflessly dedicated to Indian Classical Music, who adopted innovations to establish its importance in everyone's life. He gave stage to the prestigious artists and also encouraged innovative talents in and out of Rajasthan in addition to preserving the long cherished vintage tradition of Indian Classical Music.

2. Born on February 8, 1939, Shri Surana graduated in science from Maharaja College, Jaipur used to listen and croon spiritual music since his childhood. Once he grew older, he willingly inherited the knowledge in Indian Classical Music from his forefathers along with the art of jewellery business. In order to evoke the interest of people in Indian Classical Music, he started Varun Artists Council' about five decades ago and then established `Shruti Mandal' in August 1964 when Sitar Maestro Pt. Ravi Shankar performed at the first Musical Baithak of the institution. Main objectives of Shruti Mandal include drawing attention of masses towards Indian Classical Music and encourage people interested in the same, organizing activities for conservation and promotion of Indian Classical Music, organizing events to promote top performers and support budding talents and to motivate researchers in the field of Indian Classical Music. Many burgeoning artists were shot to fame from the stage of Shruti Mandal and they became national celebrities. Shri Surana ,through Shruti Mandal, also helped the students who wanted to learn music under the age old tradition of 'Guru-Shishya Parampara' but who were unable to do so in dearth of skilled trainers.

3. Shri Surana's commitment for elevation and promotion of Indian Classical Music resulted in constitution of 'Rajmal Surana Smriti Samaroh', a prestigious three-day festival in the year 1977, to give tribute to his father.In the year 2001 he initiated 'Rajmal Surana Smriti Samman' under which Pt. Bhimsen Joshi, Pt. Jasraj, Girija Devi, Kishori Amonkar, Pt. Rajan-Sajan Misra, Pt. Ajoy Chakrabarty, Begum Parveen Sultana, Pt. Chhannulal Mishra, Ustad Rashid Khan, Ustad Abdul Rashid Khan, Pt. Ravi Shankar, Pt. Shivkumar Sharma, Pt. Hariprasad Chaurasia, Ustad Amjad Ali Khan and Pt. Ram Narayan have been honoured till date.

4. Considering the diminishing tradition of 'Kaansen and Taansen' ,Shri Surana started a series of Musical Programmes across the year by means of Shruti Mandal. `Rajmal Surana Smriti Samaroh' in January, 'Ballet and Dance Festival' in February, 'Falgun Utsav' in March, 'Sthaniya Kalakaar Samaroh' in April, 'Raghu Sinha Smriti Samaroh' in May, 'Monsoon Festival' in June-July, 'Ustad Bismillah Khan Smriti Samaroh' in August and many more like 'Young Masters Musical Festival' were organized. He was not just a person or an organization but he was a Gharana in himself i.e. Surana Sangeet Gharana!

5. Shri Surana received accolades from multiple institutions for his unexampled contribution in the field of Indian Classical Music. In the long list of awards, major names include 'Dagar Gharana Award' by Maharana Mewar Foundation — Udaipur in 1988, `Sawai Bhawani Singh Award' by Jaipur City Palace in 2007, 'Indian Music Award' in the year 2007 and 'Rajasthan Kala Gaurav Samman' by Sangam Trust in 2014.